



Mr.sarvesh yadav ji

30 Aug 1971

08:15 PM

Mainpuri

Model: Web-MyKundli

Order No: 120459001

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 30/08/1971
दिन _____: सोमवार
जन्म समय _____: 20:15:00 घंटे
इष्ट _____: 35:58:01 घटी
स्थान _____: Mainpuri
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 27:14:00 उत्तर
रेखांश _____: 79:01:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:13:56 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 20:01:04 घंटे
वेलान्तर _____: -00:00:51 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:33:37 घंटे
सूर्योदय _____: 05:51:47 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:37:17 घंटे
दिनमान _____: 12:45:30 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 13:06:42 सिंह
लग्न के अंश _____: 18:17:15 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: मूल - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: प्रीति
करण _____: कौलव
गण _____: राक्षस
योनि _____: श्वान
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मृग
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: ये-येरुसलम
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: कन्या



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1893	भाद्रपद	8
पंजाबी	संवत : 2028	भाद्रपद	15
बंगाली	सन् : 1378	भाद्रपद	13
तमिल	संवत : 2028	आवनी	14
केरल	कोल्लम : 1147	चिंगम	14
नेपाली	संवत : 2028	भाद्रपद	14
चैत्रादि	संवत : 2028	भाद्रपद	शुक्ल 9
कार्तिकादि	संवत : 2028	भाद्रपद	शुक्ल 9

पंचांग

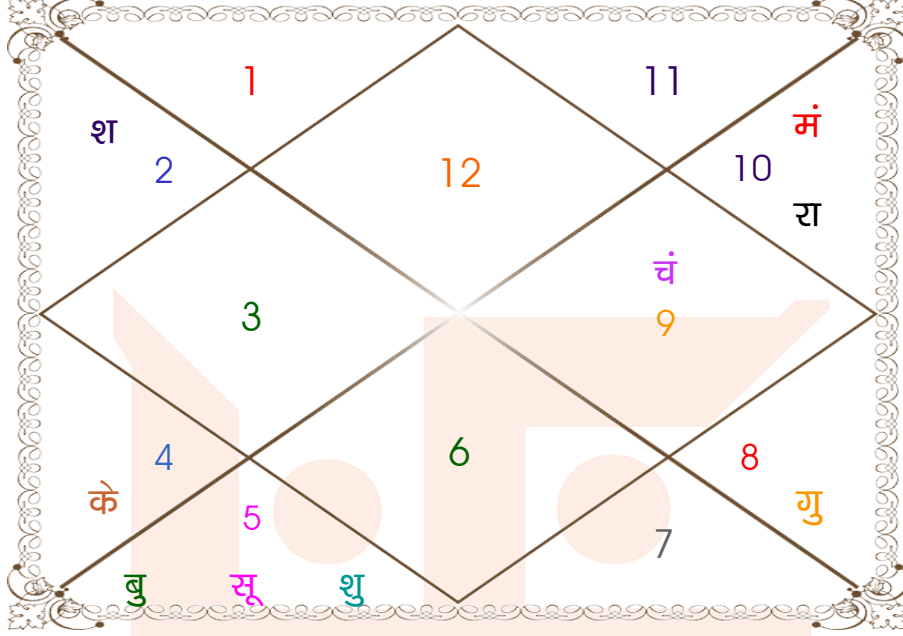
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 9
 तिथि समाप्ति काल _____ : 21:28:10
 जन्म तिथि _____ : 9
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : ज्येष्ठा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:18:26 घंटे
 जन्म योग _____ : मूल
 सूर्योदय कालीन योग _____ : विष्कुम्भ
 योग समाप्ति काल _____ : 19:45:27 घंटे
 जन्म योग _____ : प्रीति
 सूर्योदय कालीन करण _____ : बालव
 करण समाप्ति काल _____ : 09:18:30 घंटे
 जन्म करण _____ : कौलव
 भयात _____ : 02:21:22
 भोग्य _____ : 61:12:32
 भोग्य दशा काल _____ : केतु 6 वर्ष 8 मा 24 दि

घात चक्र

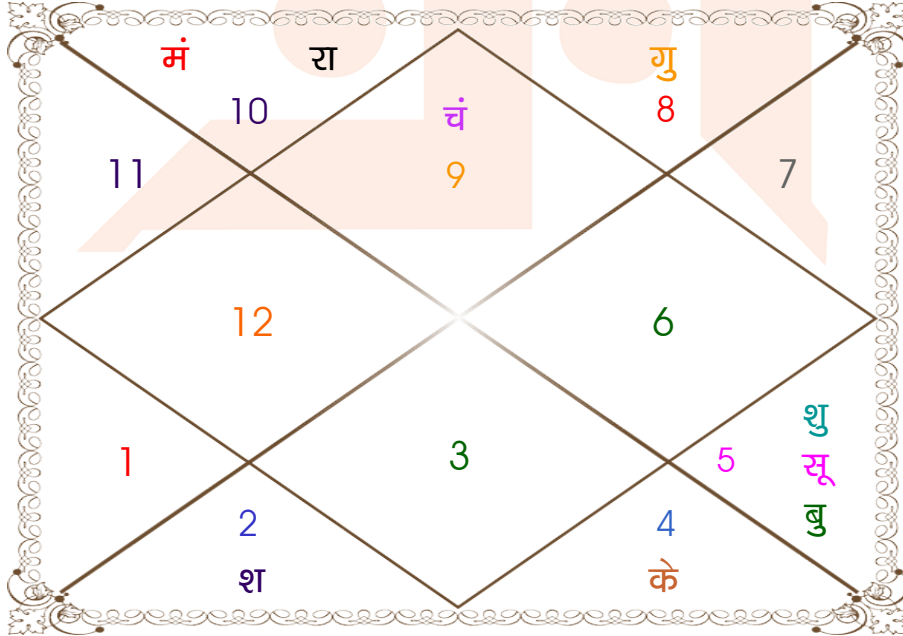
मास _____ : श्रावण
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : भरणी
 योग _____ : वज्र
 करण _____ : तैतिल
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : सिंह
 लग्न _____ : धनु
 सूर्य _____ : तुला
 चन्द्र _____ : मीन
 मंगल _____ : वृश्चिक
 बुध _____ : सिंह
 गुरु _____ : धनु
 शुक्र _____ : कुम्भ
 शनि _____ : कन्या
 राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

ल		श	
			के
रा मं			शु सू बु
चं	गु		

लग्न कुंडली

श		ल
के		रा मं
बु शु	सू	चं
		गु

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 8मा 24दि
केतु

30/08/1971

25/05/2091

केतु	25/05/1978
शुक्र	25/05/1998
सूर्य	25/05/2004
चन्द्र	25/05/2014
मंगल	25/05/2021
राहु	25/05/2039
गुरु	25/05/2055
शनि	25/05/2074
बुध	25/05/2091

योगिनी
उल्का 5वर्ष 9मा 8दि
संकटा

07/06/2020

07/06/2028

संकटा	19/03/2022
मंगला	08/06/2022
पिंगला	17/11/2022
धान्या	19/07/2023
भ्रामरी	07/06/2024
भद्रिका	18/07/2025
उल्का	17/11/2026
सिद्धा	07/06/2028



FUTUREPOINT
Astro Solutions



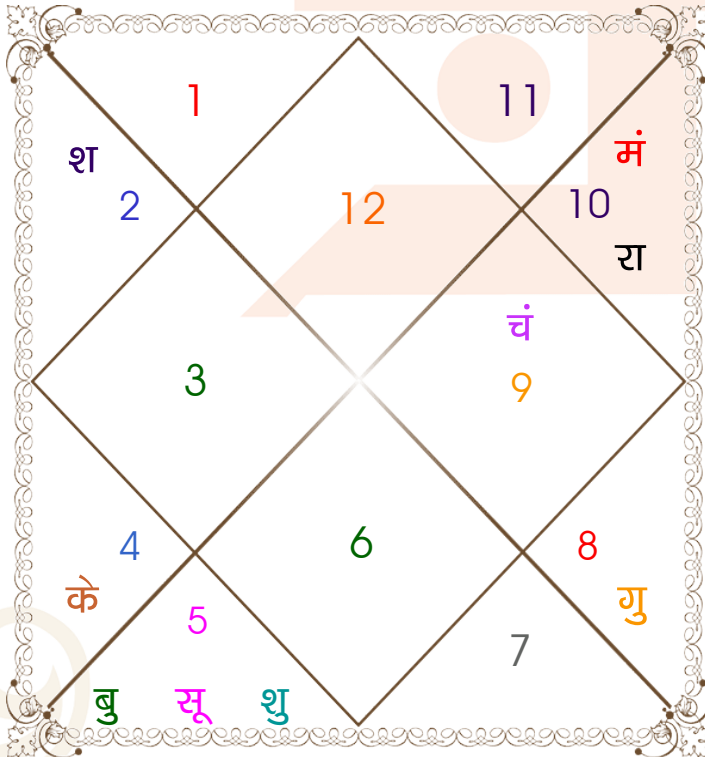
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	18:17:15	500:31:19	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	---
सूर्य			सिंह	13:06:42	00:58:00	मघा	4	10	सूर्य	केतु	बुध	मूलत्रिकोण
चंद्र			धनु	00:30:20	12:52:57	मूल	1	19	गुरु	केतु	केतु	सम राशि
मंगल	व		मक	19:04:34	00:07:44	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	उच्च राशि
बुध	व	अ	सिंह	05:59:33	00:41:23	मघा	2	10	सूर्य	केतु	राहु	मित्र राशि
गुरु			वृश्चि	05:06:54	00:06:14	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	मित्र राशि
शुक्र		अ	सिंह	13:53:07	01:14:24	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि
शनि			वृष	12:43:13	00:02:05	रोहिणी	1	4	शुक्र	चंद्र	राहु	मित्र राशि
राहु			मक	20:53:05	00:01:17	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	मित्र राशि
केतु			कर्क	20:53:05	00:01:17	आश्लेषा	2	9	चंद्र	बुध	शुक्र	मित्र राशि
हर्ष			कन्या	18:11:12	00:03:16	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	---
नेप			वृश्चि	06:55:36	00:00:35	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	बुध	---
प्लूटो			कन्या	05:12:45	00:02:07	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	---
दशम भाव			धनु	14:15:26	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	--

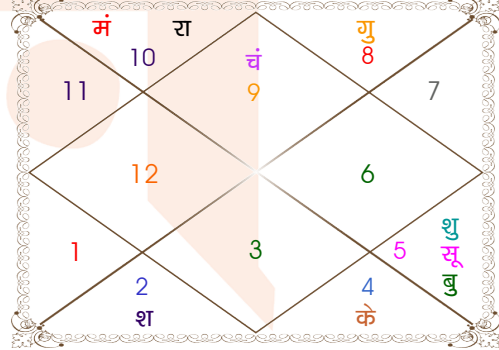
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:27:53

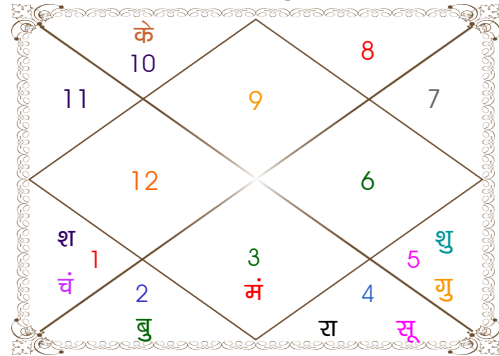
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 02:36:57	मीन 18:17:15
2	मेष 02:36:57	मेष 16:56:39
3	वृष 01:16:21	वृष 15:36:03
4	वृष 29:55:45	मिथुन 14:15:26
5	मिथुन 29:55:45	कर्क 15:36:03
6	सिंह 01:16:21	सिंह 16:56:39
7	कन्या 02:36:57	कन्या 18:17:15
8	तुला 02:36:57	तुला 16:56:39
9	वृश्चिक 01:16:21	वृश्चिक 15:36:03
10	वृश्चिक 29:55:45	धनु 14:15:26
11	धनु 29:55:45	मकर 15:36:03
12	कुम्भ 01:16:21	कुम्भ 16:56:39

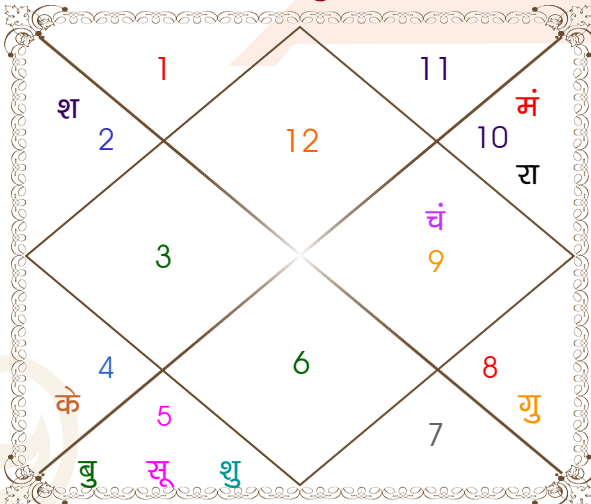
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	18:17:15
2	मेष	23:24:01
3	वृष	20:24:19
4	मिथुन	14:15:26
5	कर्क	09:08:47
6	सिंह	09:20:50
7	कन्या	18:17:15
8	तुला	23:24:01
9	वृश्चिक	20:24:19
10	धनु	14:15:26
11	मकर	09:08:47
12	कुम्भ	09:20:50

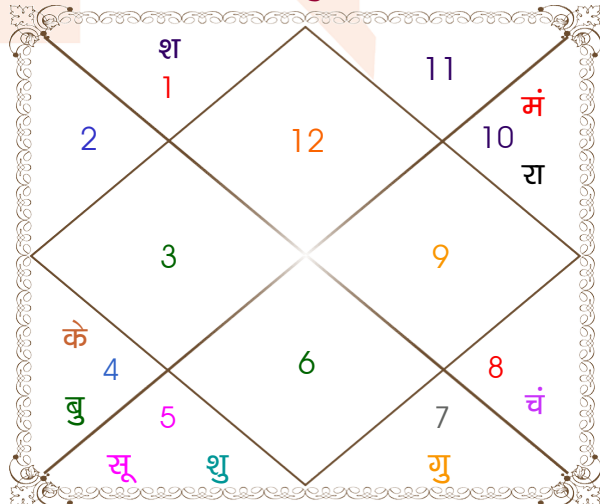
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 8 मास 24 दिन

केतु 7 वर्ष 30/08/1971 25/05/1978	शुक्र 20 वर्ष 25/05/1978 25/05/1998	सूर्य 6 वर्ष 25/05/1998 25/05/2004	चंद्र 10 वर्ष 25/05/2004 25/05/2014	मंगल 7 वर्ष 25/05/2014 25/05/2021
केतु 22/10/1971	शुक्र 24/09/1981	सूर्य 12/09/1998	चंद्र 25/03/2005	मंगल 21/10/2014
शुक्र 21/12/1972	सूर्य 24/09/1982	चंद्र 13/03/1999	मंगल 24/10/2005	राहु 09/11/2015
सूर्य 27/04/1973	चंद्र 25/05/1984	मंगल 19/07/1999	राहु 25/04/2007	गुरु 15/10/2016
चंद्र 27/11/1973	मंगल 25/07/1985	राहु 12/06/2000	गुरु 24/08/2008	शनि 24/11/2017
मंगल 25/04/1974	राहु 25/07/1988	गुरु 31/03/2001	शनि 25/03/2010	बुध 21/11/2018
राहु 13/05/1975	गुरु 26/03/1991	शनि 13/03/2002	बुध 25/08/2011	केतु 19/04/2019
गुरु 18/04/1976	शनि 25/05/1994	बुध 18/01/2003	केतु 25/03/2012	शुक्र 18/06/2020
शनि 28/05/1977	बुध 25/03/1997	केतु 25/05/2003	शुक्र 24/11/2013	सूर्य 24/10/2020
बुध 25/05/1978	केतु 25/05/1998	शुक्र 25/05/2004	सूर्य 25/05/2014	चंद्र 25/05/2021

राहु 18 वर्ष 25/05/2021 25/05/2039	गुरु 16 वर्ष 25/05/2039 25/05/2055	शनि 19 वर्ष 25/05/2055 25/05/2074	बुध 17 वर्ष 25/05/2074 25/05/2091	केतु 7 वर्ष 25/05/2091 00/00/0000
राहु 05/02/2024	गुरु 13/07/2041	शनि 28/05/2058	बुध 21/10/2076	केतु 30/08/2091
गुरु 01/07/2026	शनि 24/01/2044	बुध 04/02/2061	केतु 18/10/2077	00/00/0000
शनि 07/05/2029	बुध 01/05/2046	केतु 16/03/2062	शुक्र 18/08/2080	00/00/0000
बुध 24/11/2031	केतु 07/04/2047	शुक्र 16/05/2065	सूर्य 24/06/2081	00/00/0000
केतु 12/12/2032	शुक्र 06/12/2049	सूर्य 28/04/2066	चंद्र 24/11/2082	00/00/0000
शुक्र 12/12/2035	सूर्य 24/09/2050	चंद्र 27/11/2067	मंगल 21/11/2083	00/00/0000
सूर्य 05/11/2036	चंद्र 24/01/2052	मंगल 05/01/2069	राहु 09/06/2086	00/00/0000
चंद्र 07/05/2038	मंगल 30/12/2052	राहु 12/11/2071	गुरु 14/09/2088	00/00/0000
मंगल 25/05/2039	राहु 25/05/2055	गुरु 25/05/2074	शनि 25/05/2091	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 8 मा 23 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - गुरु 05/02/2024 01/07/2026	राहु - शनि 01/07/2026 07/05/2029	राहु - बुध 07/05/2029 24/11/2031	राहु - केतु 24/11/2031 12/12/2032	राहु - शुक्र 12/12/2032 12/12/2035
गुरु 01/06/2024 शनि 18/10/2024 बुध 19/02/2025 केतु 11/04/2025 शुक्र 04/09/2025 सूर्य 18/10/2025 चंद्र 30/12/2025 मंगल 19/02/2026 राहु 01/07/2026	शनि 12/12/2026 बुध 09/05/2027 केतु 09/07/2027 शुक्र 29/12/2027 सूर्य 19/02/2028 चंद्र 16/05/2028 मंगल 16/07/2028 राहु 19/12/2028 गुरु 07/05/2029	बुध 16/09/2029 केतु 09/11/2029 शुक्र 13/04/2030 सूर्य 30/05/2030 चंद्र 15/08/2030 मंगल 09/10/2030 राहु 25/02/2031 गुरु 30/06/2031 शनि 24/11/2031	केतु 16/12/2031 शुक्र 18/02/2032 सूर्य 08/03/2032 चंद्र 09/04/2032 मंगल 02/05/2032 राहु 28/06/2032 गुरु 18/08/2032 शनि 18/10/2032 बुध 12/12/2032	शुक्र 12/06/2033 सूर्य 06/08/2033 चंद्र 05/11/2033 मंगल 08/01/2034 राहु 22/06/2034 गुरु 15/11/2034 शनि 07/05/2035 बुध 09/10/2035 केतु 12/12/2035
राहु - सूर्य 12/12/2035 05/11/2036	राहु - चंद्र 05/11/2036 07/05/2038	राहु - मंगल 07/05/2038 25/05/2039	गुरु - गुरु 25/05/2039 13/07/2041	गुरु - शनि 13/07/2041 24/01/2044
सूर्य 29/12/2035 चंद्र 25/01/2036 मंगल 13/02/2036 राहु 03/04/2036 गुरु 16/05/2036 शनि 07/07/2036 बुध 23/08/2036 केतु 11/09/2036 शुक्र 05/11/2036	चंद्र 21/12/2036 मंगल 22/01/2037 राहु 14/04/2037 गुरु 26/06/2037 शनि 21/09/2037 बुध 07/12/2037 केतु 08/01/2038 शुक्र 09/04/2038 सूर्य 07/05/2038	मंगल 29/05/2038 राहु 26/07/2038 गुरु 15/09/2038 शनि 15/11/2038 बुध 08/01/2039 केतु 30/01/2039 शुक्र 04/04/2039 सूर्य 23/04/2039 चंद्र 25/05/2039	गुरु 06/09/2039 शनि 08/01/2040 बुध 27/04/2040 केतु 11/06/2040 शुक्र 19/10/2040 सूर्य 27/11/2040 चंद्र 31/01/2041 मंगल 18/03/2041 राहु 13/07/2041	शनि 06/12/2041 बुध 16/04/2042 केतु 09/06/2042 शुक्र 10/11/2042 सूर्य 27/12/2042 चंद्र 14/03/2043 मंगल 07/05/2043 राहु 23/09/2043 गुरु 24/01/2044
गुरु - बुध 24/01/2044 01/05/2046	गुरु - केतु 01/05/2046 07/04/2047	गुरु - शुक्र 07/04/2047 06/12/2049	गुरु - सूर्य 06/12/2049 24/09/2050	गुरु - चंद्र 24/09/2050 24/01/2052
बुध 20/05/2044 केतु 07/07/2044 शुक्र 22/11/2044 सूर्य 03/01/2045 चंद्र 13/03/2045 मंगल 30/04/2045 राहु 01/09/2045 गुरु 21/12/2045 शनि 01/05/2046	केतु 21/05/2046 शुक्र 16/07/2046 सूर्य 03/08/2046 चंद्र 31/08/2046 मंगल 20/09/2046 राहु 10/11/2046 गुरु 25/12/2046 शनि 17/02/2047 बुध 07/04/2047	शुक्र 16/09/2047 सूर्य 04/11/2047 चंद्र 24/01/2048 मंगल 21/03/2048 राहु 14/08/2048 गुरु 22/12/2048 शनि 25/05/2049 बुध 10/10/2049 केतु 06/12/2049	सूर्य 20/12/2049 चंद्र 14/01/2050 मंगल 31/01/2050 राहु 16/03/2050 गुरु 23/04/2050 शनि 09/06/2050 बुध 20/07/2050 केतु 06/08/2050 शुक्र 24/09/2050	चंद्र 03/11/2050 मंगल 02/12/2050 राहु 13/02/2051 गुरु 19/04/2051 शनि 05/07/2051 बुध 12/09/2051 केतु 10/10/2051 शुक्र 31/12/2051 सूर्य 24/01/2052

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	3
भाग्यांक	2
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 2
शत्रु अंक	1, 4, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

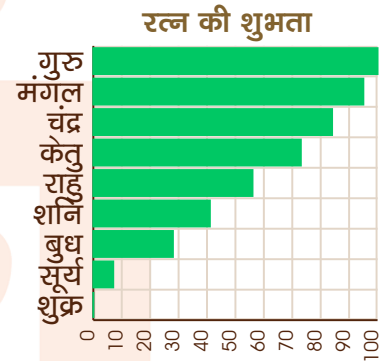


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मूंगा	मंगल	95%	धनार्जन, धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	84%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	73%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति
गोमेद	राहु	56%	धनार्जन, पराक्रम
नीलम	शनि	41%	पराक्रम हानि, हानि, व्यय
पन्ना	बुध	28%	शत्रु व रोग, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	7%	शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	शत्रु व रोग, पराक्रम हानि, दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	25/05/1978	0%	72%	100%	28%	100%	0%	16%	38%	86%
शुक्र	25/05/1998	0%	72%	95%	41%	100%	0%	52%	62%	80%
सूर्य	25/05/2004	32%	91%	100%	28%	100%	0%	16%	38%	61%
चंद्र	25/05/2014	19%	97%	95%	41%	100%	0%	41%	38%	61%
मंगल	25/05/2021	19%	91%	100%	3%	100%	0%	41%	38%	80%
राहु	25/05/2039	0%	72%	83%	28%	100%	0%	52%	69%	61%
गुरु	25/05/2055	19%	91%	100%	3%	100%	0%	41%	56%	73%
शनि	25/05/2074	0%	72%	83%	41%	100%	0%	58%	62%	61%
बुध	25/05/2091	19%	72%	95%	52%	100%	0%	41%	56%	73%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	21/03/1990-20/06/1990	15/12/1990-05/03/1993	15/10/1993-10/11/1993
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022	12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	-----
साढेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049	04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

सम
सम
शुभ
शुभ
सम

क्षेत्र

सन्तति कष्ट
बदनामी
व्यावसाय
धनार्जन
स्वास्थ्य



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है यह भाव आय समृद्धि आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही आपके आय स्रोत भी एक से अधिक रहेंगे। जीवन में जमीन जायदाद से भी आप युक्त होंगे तथा इसके कय विक्रय से यथोचित लाभ प्राप्त करेंगे। समाज में आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति रहेंगे तथा सभी लोग आपको उचित आदर प्रदान करेंगे। आपको किसी विशिष्ट सम्मान की भी प्राप्ति होगी एवं धनऐश्वर्य से युक्त रहकर आप अपना जीवन यापन करेंगे।

एकादश भाव से द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर तनाव का वातावरण रहेगा लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। साथ ही वाणी में भी यदा कदा कठोरता रहेगी एवं प्रारंभिक शिक्षा अर्जित करने में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा परिश्रम पूर्वक आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे। पंचम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से संतति से आप युक्त रहेंगे लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उनसे आपको जीवन में सुख एवं सहयोग सामान्य रूप से ही प्राप्त होगा। उच्च शिक्षा को आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करेंगे तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनसे न्यूनाधिक मात्रा में सहयोग मिलता रहेगा। षष्ठ भाव में मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही किसी प्रतियोगी परीक्षा मुकदमे या चुनाव आदि में आप सफलता अर्जित करेंगे। शरीर यदा कदा गर्मी पित या रक्त विकार आदि से सामान्य अस्वस्थ हो सकता है। लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके साथ ही मामा आदि से भी आपके विशेष संबंधों में अल्पता रहेगी तथा उनसे जीवन में सुख एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में प्राप्त होगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



इस प्रकार आप धनऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा यत्न पूर्वक पारिवारिक जनों का आधुनिक परिवेश में लालन पालन करेंगे जिससे आपसे वे सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे इच्छित सहयोग एवं सुख प्राप्त करेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा एवं आपसी संबंधों में भी सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्ण्यता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4. शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में विषधर नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक को ज्ञानार्जन करने में आंशिक व्यवधान उपस्थित होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में थोड़ी बहुत बाधा आती है एवं स्मरण शक्ति का प्रायः ह्रास होता है। जातक को नाना-नानी, दादा-दादी से लाभ की सम्भावना होते हुए भी आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। चाचा, चचेरे भाईयों से कभी-कभी मतान्तर या झगड़ा झंझट हो जाता है। बड़े भाई से भी किसी समय थोड़ा बहुत विवाद हो जाता है।

इस योग के कारण जातक अपने स्थान से बहुत दूर निवास करता है या फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता रहता है पर कालान्तर में जातक के जीवन में स्थायित्व भी आता है। लाभ मार्ग में थोड़ा बहुत व्यवधान उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति किसी समय चिन्तातुर हो जाता है। धन सम्पत्ति को लेकर कभी बदनामी की स्थिति भी पैदा हो जाती है या थोड़ा बहुत संघर्ष की स्थिति बनी रहती है। सर्वत्र लाभ दिखालाई देता है पर कांच में दिखाई देने वाले रुपयों की तरह हस्तगत नहीं होता। सन्तान पक्ष से थोड़ा बहुत परेशानी घेरे रहती है तथा जातक को अपने शरीर में भी रोग व्याधि लग जाती है और उससे कष्ट उठाना पड़ता है। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है तथा जीवन का अन्त प्रायः रहस्यमय ढंग से होता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अष्टारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव में केतु स्थित है एवं शनि से दृष्ट है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में मंगल और केतु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में केतु पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ काले कुत्ते को मीठी रोटी खिलाएं । रंगबिरंगी चिड़ियों को दाना डालें । नारियल का दान करें या जल प्रवाह करें । ब्राह्मणों की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें ।

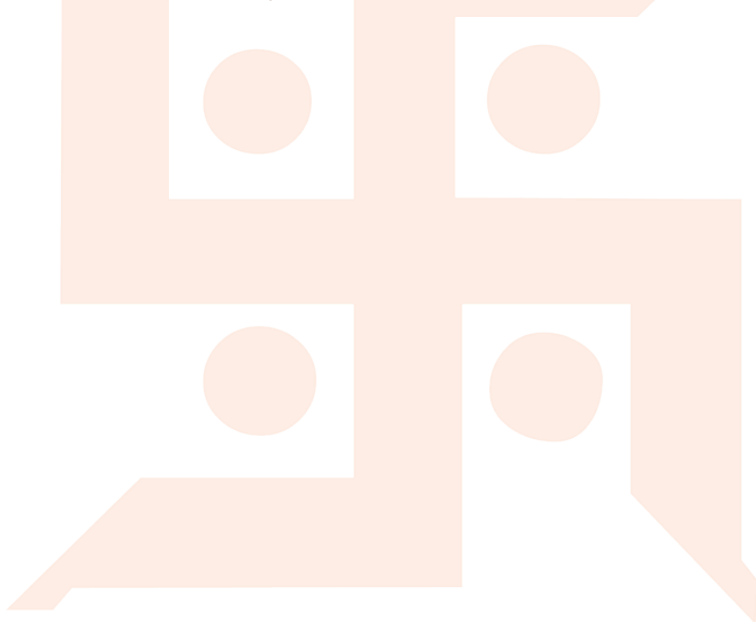
आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो

आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

सिंह राशि में रवि हो तो जातक सत्संगी पुरुषार्थी, योगाभ्यासी, वनविहारी, कोधी, गम्भीर, उत्साही, तेजस्वी एवं धैर्यशाली होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

दसवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान् रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप

सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

ग्यारवें भाव में मंगल हो तो जातक धैर्यवान्, न्यायवान्, प्रवासी, साहसी, लाभ करने वाला, क्रोधी, झगड़ालू, दम्भी एवं कटुभाषी होता है।

मकर राशि में मंगल हो तो जातक ख्यातिप्राप्त, पराकमी, नेता ऐश्वर्यशाली, सुखी, सेनापति, उच्चपुलिस अधिकारी, प्रशासक, प्रचुर सन्तान, उदार, परिश्रमी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अर्जित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

षष्ठभावे में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्म, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

नवमभावे में गुरु हो तो जातक पराकमी, धर्मात्मा, पुत्रवान्, बुद्धिमान्, राजपूज्य, तपस्वी, विद्वान्, योगी, वेदान्ती, यशस्वी, भक्त, भाग्यवान् संन्यास की ओर प्रवृत्ति एवं प्रचुर सन्तान होता है।

वृश्चिक राशि में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, राजमन्त्री, कार्यकुशल, सुगठित शरीर, अपनी उच्चता का दिखावा करने वाला, स्वार्थी, निर्बलस्वास्थ्य, दुःखी एवं कामुक होता है।

शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुखी एवं गुप्तरोगी होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

तृतीय भाव में शनि हो तो जातक नीरोगी, विद्वान् योगी, मल्ल, शीघ्रकार्यकर्ता, सभाचतुर, चंचल, भाग्यवान्, शत्रुहन्ता, एवं विवेकी होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

राहु

ग्यारहवें भाव में राहु हो तो जातक परिश्रमी, अल्पसन्तान, विदेशियों से धनलाभ, दीर्घायु, मन्दमति, लाभहीन, अरिष्टनाशक, व्यवसाययुक्त, कदाचित् लाभदायक एवं कार्य सफल करने वाला होता है।

मकर राशि में राहु हो तो जातक मितव्ययी, कुटुम्बहीन एवं दाँत रोगी होता है।

केतु

पंचम भाव में केतु हो तो जातक वातरोगी, कुचाली, कुबुद्धि, सन्तान को नष्ट करता है, योगी, कुशाग्रबुद्धि एवं क्रोधी होता है।

कर्क राशि में केतु हो तो जातक वातविकारी, भूतप्रेत पीड़ित एवं दुःखी होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(25/05/2021 - 25/05/2039)

राहु की महादशा 25/05/2021 को आरम्भ और 25/05/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष। आपकी जन्मकण्डली में राहु ग्यारहवें भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि पंचम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपके जीवनचर्या में उन्नति, भाई-बहनों तथा सम्बन्धियों से लाभ, छोटी यात्रा तथा शक्ति में वृद्धि होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको आर्थिक समृद्धि की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा इच्छाओं की पूर्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप सुखी तथा आशावादी होंगे। राहु के कारण आपको हर तरह की भोजन के मामले में हर तरह की अतिशयता से बचना चाहिए। गरिष्ठ भोजन से बचें। मौसम में परिवर्तन के कारण पाचन क्रिया में गड़बड़ी, चर्मरोग, पित्त से सम्बन्धित रोग, बुखार, कान तथा निचली भुजा में कष्ट हो सकता है। सावधानी बरतने से इनमें से अधिकांश बीमारियों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपका आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। आपके पास धन होगा, आर्थिक लाभ के अवसर मिलेंगे और निवेश तथा सट्टा लाभदायक होगा। इस अवधि में आपको सम्पत्ति, समृद्धि तथा अचानक लाभ मिलेगा। आपकी अनेक इच्छाएं आकांक्षाएं पूरी हो सकती हैं। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, दवा, लेखा, कम्प्यूटर, खेल, पराविज्ञान तथा जलसेवा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, एण्टीबायोटिक दवाओं, चमड़े के सामान, लोहा और इस्पात आदि का व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को विरोधियों पर विजय, कार्यस्थान में अनुकूल स्थिति, लाभ और सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके सहकर्मी तथा अधीनस्थ कर्मचारी आपके सहयोगी होंगे। आपका स्थानान्तरण या परिवर्तन हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को सम्पत्ति की प्राप्ति, लाभ में वृद्धि, व्यापार में विस्तार तथा हर प्रकार का लाभ मिलेगा। आर्थिक समृद्धि तथा महत्वाकांक्षा की पूर्ति और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह दशा अति उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

शुक्र की अन्तर्दशा में आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आवास में परिवर्तन सम्भव है। जमीन-जायदाद के मामलों में हानि कम करने के लिए सावधानी बरतना चाहिए। आप वाहन खरीद सकते हैं। मंगल की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु लाभदायक यात्रा होगी। शुक्र तथा शनि की अन्तर्दशा में दूर की यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने महत्वाकांक्षा की पूर्ति

करेंगे। आप सभी परीक्षाओं और प्रतिस्पर्धाओं में सफल होंगे। अर्थशास्त्र, दवा, प्रबन्धन, इंजीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि हो सकती है। आप पराविज्ञान, खेल, दर्शनशास्त्र आदि में रुचि रखते हैं और शिक्षा से अलग गतिविधियों में आगे बढ़ेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपके बच्चे आपकी खुशी के साधन होंगे। आपके जीवनसाथी को सुख, निवेश तथा सट्टे में सफलता, समृद्धि तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी से आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आपकी माता को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। उनकी अचानक छोटी यात्रा और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जबकि आपके पिता को संबंधियों से लाभ मिलेगा और यात्रा होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को समृद्धि मिलेगी जबकि बड़े भाई-बहनों को यश, ख्याति, सम्पत्ति, शक्ति तथा अधिकार मिलेगा। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सम्पत्ति-समृद्धि की प्राप्ति और इच्छाओं की पूर्ति होगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपको हर प्रकार का लाभ और प्रतिष्ठा मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा के दौरान यश और ख्यति मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और उन्नति होगी। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शिक्षा उत्तम होगा और सट्टे में लाभ होगा। केतु की अन्तर्दशा के कारण कुछ समस्या हो सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप शादी, साझेदारों से लाभ तथा यात्रा होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हो सकती है, जबकि मंगल की अन्तर्दशा में यात्रा, संबंधियों से सहायता तथा जीविकोपार्जन में उन्नति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



**अंतर्दशा :- राहु - गुरु
(05/02/2024 - 01/07/2026)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/05/2021 को प्रारंभ होकर 25/05/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/02/2024 को प्रारंभ होकर 01/07/2026 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बृहस्पति शुभ ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 1, 3, 5 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दार्शनिक, उपदेशक या अध्यापक हो सकते हैं। व्याख्यान के लिए देश-विदेश का भ्रमण कर सकते हैं। संयमित जीवन व्यतीत करेंगे; ईश्वर में ध्यान लगाएंगे। अपने से बड़ों के आज्ञाकारी होंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- राहु - शनि
(01/07/2026 - 07/05/2029)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 25/05/2021 को प्रारंभ होकर 25/05/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 01/07/2026 को प्रारंभ होकर 07/05/2029 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मप्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है। शनि शक्तिशाली ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 5, 9, 12 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में उच्चाधिकारी आपसे प्रसन्न रहेंगे। आप नगरपालिका, पंचायत आदि के अध्यक्ष बन सकते हैं। बहुत लोगों की मदद करेंगे। सफलता बाधाओं को पार करने के बाद ही मिलेगी। आर्थिक स्थिति मजबूत बनेगी।

अगर नौकरी में हैं तो प्रोन्नति हो सकती है, भाइयों से विवाद हो सकता है। मन में निराशा की भावना रह सकती है जो समय गुजरने पर ठीक हो जाएगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में

जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर, शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

**अंतर्दशा :- राहु - बुध
(07/05/2029 - 24/11/2031)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 25/05/2021 को प्रारंभ होकर 25/05/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 07/05/2029 को प्रारंभ होकर 24/11/2031 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में छठे भाव में स्थित है। छठे भाव बीमारी, सुश्रूषा, मातहत या सेवक, कर्ज, शत्रु, कंजूसी और अतिकष्ट का द्योतक है। छठे भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस दशा की अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है, आलस्य की भावना हो सकती है। शिक्षा में बाधा आ सकती है। आप झगड़ालू और दिखावापसंद हो सकते हैं। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपका व्यवहार उत्तेजनापूर्ण हो सकता है, इस कारण कोई स्नायविक या मानसिक व्याधि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।